PAGE NO.:
DATE : / /

अलंकार
काव्य की शोभा बढाये उसको अलंकार कहते है
अलंकृत करता है
1) शब्दालंकार
2) अर्थालंकार

~~अनुप्रास~~ यमक अलंकार :
एक शब्द होता है और उसका अर्थ अलग-अलग होता है

अनुप्रास
~~एक~~ दो या दो से अधिक बार वर्ण आये उसको अनुप्रास अलंकार कहते है।

वर्ण बार-बार आने से काव्य मे सौंदर्य उत्पन्न होता है।

5 प्रकार
1) वृत्यानुप्रास
2) अत्यंताअनुप्रास
3) लाटानुप्रास
4)
5)

PAGE NO.:
DATE: / /

राधा का पिता - वृषभानु
हलधर - बलराम

श्लेष अलंकार - द्विपकना
काक शब्द हो उसका अर्थ कहीं तरह होता है । काक शब्द दो अर्थ से द्विपा
शब्द इतना ही महत्त्व रहता है जैसे अर्थ भी

रूपक अलंकार - राधा का मुख चंद्रमा है। (अभेद आरोप किया जाता है

———×———

उपमेय और उपमान का अर्थ
मुख की तुलना वो उपमेय - ध राधा का मुख
जिसकी तुलना करते है वो उपमान - चंद्रमा जैसा है
उपमा : तुलना
उपमेय और

उत्प्रेक्षा : (संभावना व्यक्त किया जाता है)
उपमेय मे उपमान की संभावना प्रकट किया जाये वहा मे उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

मानु ली जीता · उसका मुख चंद्रमा जैसा है।
(मानो जानो)

प्रतीप - (उपमा का उल्टा है)
चाँद राधा के मुख जैसा है।

भामह, दंडी, रुद्रट, भक्त

PAGE NO.:
DATE: / /

व्यतिरेक : (दोष बता रहा है)
सीता का मुख चंद्रमा जैसा नही है क्योंकि चंद्रमा सौंदर्य मे सीता है चंद्रमा से बढ़कर सीता सौंदर्य वती है।

भरतमुनि से ग्रंथ होती है
उपमा
रूपक
यमक
दीपक

भामह :
काव्यालंकार मे 37 अलंकार किये।
काव्य की आत्मा अलंकार है।

जिस प्रकार किसी नारी का सुंदर मुख भी आभूषणों के बिना शोभित नही होता उसी प्रकार अलंकार के बिना कविता सुशोभित नही होती

दण्डी :-
काव्यशोभाकरान् धर्मान्, अलंकार प्रचक्षते

काव्य शोभा करानेवाला धर्म अलंकार है
जो भी धर्म, गुण, रस काव्य की शोभा बढ़ाती है वो अलंकार है।

PAGE NO.:
DATE: / /

केशवदास
कठीण काव्य का प्रेत - आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहे है
* छंदो का अध्यायपुर
जदपि सुजाति सुलक्षणी, सुबरन सरस सुवृत्त
भूषन बिनु न बिराजई, कविता वनिता मीत
यद्यपि कोई स्त्री सुंदर वर्ण (उच्चवर्ग की) लक्षणवाली (वाली हो)
बात करने मे मधुरता हो अगर वो आभूषण नही पहनती तो कविता और वनिता (स्त्री) सुंदर नही दिखती अलंकार नही है वो अलंकार नही है